तबला

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930
पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931
© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008
PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – विधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, गौतम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, प्रिंगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होसकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टैंड पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2670869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

तबला

पापा बबली जीत

यह जीत के पापा हैं।
इनके पास एक तबला है।
जीत के पापा बहुत अच्छा तबला बजाते हैं।
जीत को पापा का तबला बजाना बहुत पसंद है।

जीत का मन भी तबला बजाने को करता है।
पापा तबले को हमेशा अलमारी में बंद रखते हैं।
पापा कहते हैं कि वह जीत को तबला बजाना सिखाएँगे।
उसके बाद जीत को तबला मिलेगा।

जीत के स्कूल की छुट्टियाँ हो गई थीं।
वह बहुत खुश था।
जीत ने सोचा कि वह रोज़ सुबह देर तक सोएगा।
उसे सुबह जल्दी उठकर नहाना भी नहीं पड़ेगा।

कुछ दिनों तक जीत खूब सोया।
वह दिनभर खेलता था।
कहानियों की किताबें पढ़ता था।
रात को जल्दी सो जाता था।

इन सबसे जीत का मन जल्दी ही ऊब गया।
पापा ने देखा कि जीत ऊबा हुआ लग रहा था।
पापा ने उसे अपना पुराना तबला दे दिया।
जीत तबला पाकर बहुत खुश हुआ।

पापा ने जीत को तबला सिखाना शुरू किया।
उन्होंने जीत को तबले की पहली ताल सिखाई।
जीत दिनभर यह ताल बजाता रहा।
ना–घी–घी–ना, ना–घी–घी–ना

जीत रात को तबला अपने पास रखकर सोया।
वह सपने में भी पहली ताल बजाता रहा।
जीत नींद में पहली ताल बोलता भी रहा।
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना

सुबह होते ही जीत पापा के पास तबला लेकर बैठ गया।
पूरे घर में तबले की ना-घी-घी-ना गूँज रही थी।
जीत की कलाई में दर्द होने लगा।
इसके बावजूद जीत तबला बजाता रहा।

पापा ने जीत को तबले की एक और ताल सिखा दी।
धा-धिन-धा, धा-धिन-धा
जीत के मज़े आ गए।
वह रात तक बारी-बारी से दोनों तालें बजाता रहा।

सुबह होते ही जीत का मन हुआ कि तबला बजाए।
उसने रात को तबला बरामदे में छोड़ा था।
तबला बरामदे में नहीं था।
जीत गाने लगा ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।

जीत आँगन में गया।
उसे लगा पापा ने तबला धूप दिखाने के लिए रखा होगा।
तबला आँगन में नहीं था।
तभी जीत को तबला बजने की आवाज़ सुनाई दी।

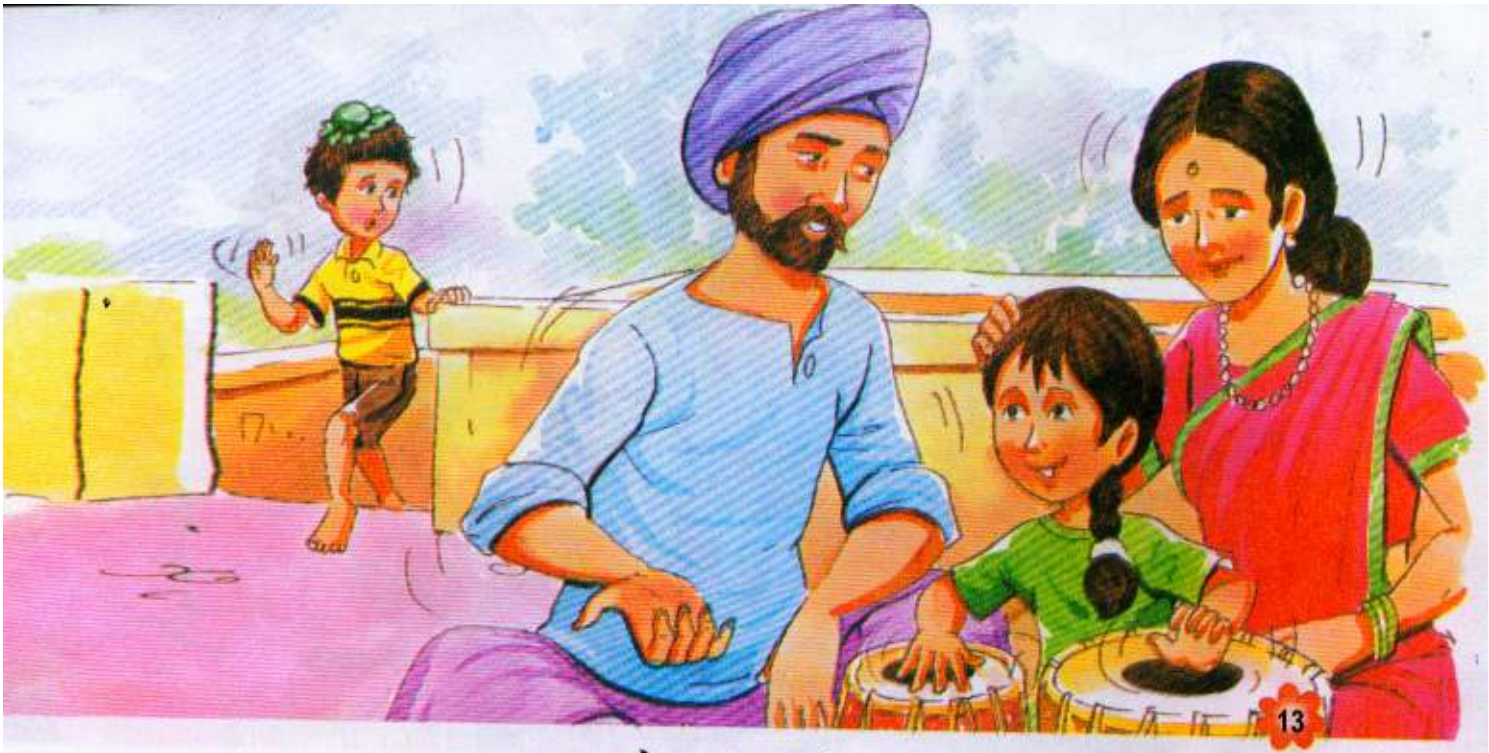

आवाज़ छत पर से आ रही थी।
जीत छत पर गया।
वहाँ मम्मी, पापा और बबली बैठे हुए थे।
बबली तबला बजा रही थी।

पापा बबली को भी पहली ताल सिखा रहे थे।
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।
बबली ताल गा रही थी और उसे बजा रही थी।
मम्मी भी बबली का तबला बजाना देख रही थीं।

जीत बबली से लड़ने लगा।
वह बोला कि तबला उसका है।
जीत ने बबली से तबला छीनने की कोशिश की।
बबली बोली कि तबला उसका भी है।

पापा ने दोनों की लड़ाई रोकी।
पापा बोले कि तबला दोनों के लिए है।
बबली सुबह तबला बजाना सीखेगी।
जीत शाम को तबला बजाना सीखेगा।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

2092

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING